Vibrant Pushti

सकारात्मक पुष्टि स्पंदन

सचित्र

संस्करण भाग - 3

सेवा सत्संग स्पर्श धारा

प्रकाशक: Vibrant Pushti - Vadodara

Vibrant Pushti

53, सुभाष पार्क सोसायटी

संगम चार रास्ता

हरणी रोड - वडोदरा - 390006

गुजरात - India

Email: vibrantpushti@gmail.com

Mobile: +91 9327297507

Vibrant Pushti

"जय श्री कृष्ण"

निरखुं जिस तरफ द्रष्टि उठाके पाऊं मेरे साँवरिया

साँवरिया मेरे नयन बसिया

साँवरिया मेरे चितचोर रसिया

पलकें उठाऊं पलकें झुकाऊं नजर जहां जहां फहराऊं

अश्रु बहाऊं इंतजार करुं यादों में कहां कहां खो जाऊं

नयनों में मेरे साँवरिया

निरखुं जिस तरफ द्रष्टि उठाके पाऊं मेरे साँवरिया

अपलक निहालुं पलक न खोलुं तरंगो से क्या क्या कृति रचाऊं

चक्षु जगाऊं दिक्षु दर्शाऊं तन मन द्वार से तहां तहां पहूँचुं

हर दिशा में मेरे साँवरिया

निरखुं जिस तरफ द्रष्टि उठाके पाऊं मेरे साँवरिया

साँवरिया मेरे नयन बसिया

साँवरिया मेरे चितचोर रसिया

रंग की भाषा न्यारी

रंग की रीत निराली

हर रंग ऐसा गहरा

हर रंग का खेल दुलारा

रंग रंग से जुडे सर्वे

हर रंग से गुले सर्वे

रंग रंग से पाये खुशी

रंग रंग से लूटे मस्ती

रंग रंग में डूबे ऐसे

रंग रंग से खिले ऐसे

रंग ही जीवन रंग ही तन मन

रंग ही सर्जन रंग ही लगन

रंग रंग में प्रियतम रंग रंग में अमृतम्

रंग रंग में ब्रह्म रंग रंग में श्याम

यही रंग से मैं श्याम साँवरे की

यही रंग से मैं प्रिये प्रिया प्रियतम की

बिना रंगाये मैं जगत कैसे छोड़ूंगी

तेरे ही रंग में रंग गई साँवरिया

क्या क्या नाम से पुकारे तुम्हें हे प्रभु!

जो लीला रचाये जो दर्शन दिखलाये

जो ज्ञान जगाये जो भाव प्रकटाये

करनी वैसी हमारी ऐसा पास आये

पल पल पल पल रीत जताये

हम कैसे तुम्हारे शरण में आये

कैसा है यह नाता हमारा

जो हर नाम से तु दौडा आये

मेरे मन में तु है साँवरिया कृष्ण

मुझसे पल पल छूपा छूपी खेलाये

तु ही मेरे प्रियतम प्यारा!

गोवर्धन, यमुना, श्रीनाथ दरश कराये

खेलत आज श्याम मेरे संग

छूपत छूपत लपक लपक अंग

ओझल हो गये विरह तरंग

एक हो गये तन मन रंग

कभी न बिछडे आत्म उमंग

कितना भी कटे जन्म बेरंग

क्यूँकि

श्याम रंग बंधी श्याम संग जुडी

श्याम जगे सदा कहीं न कहीं

चाहे कभी

नयन ढूँढे फलक अपलक

मुखडा पुकारे मन विरह अगन अगन

सांसों की सरगम गाये श्याम प्रियतम

न निकट रहे से चैन नही हम

सदा निभायेंगे प्रीत हर कदम

ताल से ताल नजरिया नाचें

खेलत श्याम संग प्रीत नव विलास

तिरछी नजरिया से तीर चलाये

मोहक अदा से तन मन ललचाये

बार बार मुखडा अठखेलियाँ सोहाय

खेलत श्याम संग प्रीत नव विलास

चटक चुनरिया फर फर लहराये

रेशम जामा घुमर घुमर घुमराये

छन्न छन्न पायल झंकार श्याम जगाय

खेलत श्याम संग प्रीत नव विलास

हिचक हिचक अंग अंग नाचें

मधुर मधुर बँसी तान बाजे

रमझट गीत संगीत हिलोरें भराय

खेलत श्याम संग प्रीत नव विलास

सुधबुध खोयी श्याम श्याम होयी

श्याम श्याम ने श्याम रंग भिगोयी

श्याम प्रीत रंग में मैं श्यामा भयी

खेलत श्याम संग प्रीत नव विलास

मन के पंख से दौड़ू साँवरिया तोरे दर्शन आश

दूर दूर भटके तोरी नगरीयां कैसे पहुँचे पास

सुध न कोई बुध न कोई कौन बताये वास

पल पल जागे पल पल भागे संसार भवरीयां थांस

तु ही गोपाल तु ही रखवाल कब बुझाये प्रीत प्यास

छोड न ना मुख मोड साँवरिया तु ही मेरा प्रियतम

"प्रियतम" लिखते ही कुछ होता है।

"प्रियतम" पढते ही कुछ होता है।

"प्रियतम" सुनते ही कुछ होता है।

"प्रियतम" स्मरण से ही कुछ होता है।

"प्रियतम" सोचते ही कुछ होता है।

क्या होता है ऐसा जिससे तन मन और जो भी मैं हूँ उनमें निराला परिवर्तन जागता है?

तन के सर्व बिंदु से पुकार उठती है,

मन के केन्द्र से गुंज उठती है,

खुद में आकर्षण जागता है जो कोई खिंचता है।

अंग के हर साधन में गति खिलती है।

अनोखा रस उदभव होता है,

जिससे आत्मा साकार स्वरूप को प्रज्वलित करता है,

बार बार सलामत रहने और रखने के लिए तडपता रहता है।

हे प्रियतम!

यह गहरी साँस

यह गहरी उमंग

यह गहरी तीव्रता

यह गहरी पुकार

यह गहरा इंतजार

यह गहरा विरह

क्यूँ है तन मन में

करता है कोई प्यार यही निल जगत में

करता है कोई याद यही अगन संसार में

करता है कोई धैर्य यही निष्ठुर धरती में

करता है कोई अमी यही खारे सागर में

करता है कोई सिंचन यही दु:खी वनस्पति में

करता है कोई साथ यही अविश्वास मानव में

ओहह! मेरे प्रभु! वाह मेरे प्रभु! प्रियतम मेरे प्रभु!

प्रीत की रीत कितनी निराली

हर पल नव नूतन होय

कभी वह याद आये

कभी उनकी रीत याद आये

कभी उनकी सूरत याद आये

कभी उनके बोल याद आये

कभी उनका मिलना याद आये

कभी उनका बिछडना याद आये

ऐसी पल से खिले तन मन

जो दिल का भंवर रचाय

जब पाये निकट हमारे गुन गुन करता जाय

ऐसी गूंजन प्रीत करे जो रोम रोम हरखाय

हर बार वह हारे हमको हरता जाय

नहीं देखा तुम्हें तो भी नयनों में तस्वीर जागती है

नहीं छूया तुम्हें तो भी हर सांस से स्पर्श पाते है

नहीं मिला तुम्हें तो भी हर पल ख्यालों में मिलते है

क्या यही हमारी प्रीत रीत है?

संसार की कितनी मायाजाल में हमें धकेला है

जगत के कितने बंधन में हमें कहीं कहीं जोडा है

याद रखना है साँवरिया!

मैं साँवरे हो कर ही तुम्हें पाऊंगा।

मेरे विचार की शुद्धता से

मेरे कर्म की पवित्रता से

मेरे स्पंदन की समानता से

मेरे अक्षर की योग्यता से

शृंगार करत मुख निखारत हो गये तेरे दिवाने

नयनन अश्रु माला हो गयी तेरे गले पहनाने

होस्ठ पंखुड़ियाँ पंकज हो गये तेरे चरण छूने

हस्त उंगलियां आचल हो गये अंग अंग लगाने

धडकन आरत उर्मि हो गई अखंड प्रीत बरसाने

तन मन धन अर्पित हो गये जीवन शरण करने

खेलत श्याम रमत हमसे

हर बार हारत नहीं खेवन जीत

हारत हमसे तो कुछ करत हमसे

हार कर भी बार बार खेलत

रीत निराली निभाते हमसे

खेलत श्याम रमत हमसे

जीत जीत कर थक गये

फिरभी न छूडे साथ हमारा

हाथ पकड खेल ही खेलें

खेलत निरंतर खेल हमसे

नहीं पता पर उन्हें पता

खेल क्यूँ न छोडे हमसे

क्या आनंद आये खेल से

खेल खेल कर मुस्काये

खेलत श्याम रमत हमसे

जागत रैन पिया के संग

जन्म जन्म की प्रीत बरसाने

पिया नटखट नयन अपलक

निरखे टुकुर ज्योत आत्म जगाये

चतुर चकोर मनवा पुकारे

मिलन की तरस बढाये

अंग अंग मधुर रस बिखराये

रस से रसना हुई बावरी

श्यामा श्याम श्यामल रंग रंगाये

एक श्याम बहुत श्याम खेल रचाये

जीवन के हर सूत्रों से जाना है तुम्हें

जीवन की हर रीति से पहचाना है तुम्हें

जीवन के हर अक्षर से नवाजा है तुम्हें

जीवन के हर सांस से बांधा है तुम्हें

तुहीं बता अब तुज में समाऊ कैसे

तुहीं बता अब मुझमें तुजे जगाऊ कैसे

साँवरे! कैसी है यह लगन के

तुझे मेरी प्रीत से सजाऊ कैसे

तुझे मेरी धडकन से नचाऊ कैसे

तुझे मेरे विरह से रुलाऊ कैसे

तुझे मेरी आत्म से मिलाऊ कैसे

तुझे मेरे हाथों से खिलाऊ कैसे

तुझे मेरे नयनों से नहलाऊ कैसे

तुझे मेरे होठों से पीलाऊ कैसे

ख्यालों में आती है तो रंग बिखेरती है

नयनों में आती है तो अंग लहराती है

हाथों में हाथ रखती हो तो प्रीत धारा बरसाती है

दूर कहीं जाती हो तो विरह याद तरसती है

एक बार राधाजी ने कान्हा से कहा

कान्हा! मेरे लिए झुला बंधवाओ,

झूला झुलन का मन होवे साँवरा

कुछ खेलन का मन होवे बावरा

कान्हा तो दौड के गिरिराज वनराई निकुंज पहूंचा और पलक झबक के अपनी हृदयेश्वर के लिए

अपनी जुल्फों से झुला बांधा

मन की उमंग से दोर गूंथी

सांसों की महक से झुला सजाया

अंतरंग दुपट्टे से बैठक लगायी

दिल की धडकन से पुकार लगायी

हस्त कमल से झुला झुलाया

हर्ष उल्लास से झुला खींचा

प्रीत प्यारी का प्यार पिलाया

कितनी अदभुत लीला है मेरे साँवरिया की

सूरज उगता है तो हर किरण "जय श्री कृष्ण" कहता है।

धरती से उठती हर रज "जय श्री कृष्ण" करता है।

सागर की हर बूँद बास्प हो कर "जय श्री कृष्ण" करता है।

वनस्पति के हर पत्ते "जय श्री कृष्ण" करता है।

चंद्र उगता है तो हर किरण "जय श्री कृष्ण" करता है।

आकाश के सारे तारे टीम टीमाके "जय श्री कृष्ण" करता है

फूलों खिलते खिलते रंग महक से "जय श्री कृष्ण" कहता है।

वायु मंद मंद स्पर्श से "जय श्री कृष्ण" कहता है।

अलौकिक है यह जय घोष मेरे लिए

जो पल पल "जय श्री कृष्ण" जगाता है

"जय श्री कृष्ण" से मिलाता है

"जय श्री कृष्ण" से एकाकार करता है।

वाह! मेरे कृष्ण!

वाह! मेरी यमुना!

वाह! मेरे वल्लभ!

कृष्ण कृष्ण क्यूँ नाम धडकन में धडके

कृष्ण कृष्ण क्यूँ नाम सांसों में बसे

कृष्ण कृष्ण क्यूँ नाम होठों पर रमे

कृष्ण कृष्ण क्यूँ नाम कर्णो में बजे

कृष्ण कृष्ण क्यूँ नाम कदमों से चले

कृष्ण कृष्ण क्यूँ नाम विरह से तडपे

कृष्ण कृष्ण क्यूँ नाम इंतजार में भटके

कृष्ण कृष्ण क्यूँ नाम पलकों से मटके

कृष्ण कृष्ण क्यूँ नाम नयनों में अटके

कैसे जीते है?

कैसे रहते है?

कुछ समझो मेरे प्रियवर श्रीकृष्ण!

पता नहीं कितनी सांस की डगरियाँ साथ लाया हूँ

पर जबसे

तेरे सांस की पहचान पाया हूँ

तबसे

मुझमें तुम कितने खिलें वह तो मेरा प्रीत सुमन जाने और तेरी प्रीत की धारा

क्यूँकि

तेरी हर सांस से पीता हूँ जगत में जीने की कला

तेरी हर सांस से जीता हूँ संसार सागर पार करने की अदा

तुम मुझमें इतने डूब गये साँवरिया!

की

छूट गये सारे बंधन जीवन के

तूट गये सारे रिश्ते तन मन के

मैं मैं न रहा मैं तुम हो गई

तु तु न रहा तु क्या क्या हो गया

तु परब्रह्म है तो मैं ब्रह्म लीन हो गया

तु साँवरा है तो मैं साँवरि हो गई

तु प्रिया है तो मैं प्रियतम हो गई

तु राधा है तो मैं तेरा चरण दास हो गया

तु श्याम है तो मैं श्यामा हो गई

खिंचत धडकन खुद की धडकन मिलाने

तडपत सांस अपने प्रिय को मिलने

तन दौडत मन भागत इंतजार तोडने

दिल पुकारत अधर फडफडत

समझना दर्शन की तीव्र प्यास है

पलक झबकते सर्वस्व अचल दिया

सामने पाया श्री हरि मलकते

जागत नैन तो जागत दिन

नैन जगावत जीवन जगावत

जागत नैन तो जागत दिन

नैन से जागत जगत जानत

जगत जानत खुद रीत रचावत

खुद रीत से खुद जगत रचावत

जागत नैन तो जागत दिन

नैन को भाये नैन में बसाये

नैन में बसाये खुद को सजाये

खुद का शृंगार कर नैन नचाये

जागत नैन तो जागत दिन

नैन से नैन मिले उन साँवरिया से

खुद नाचे साँवरिया को नचाये

नाचत साँवरिया जीवन संवारे

जागत नैन तो जागत दिन

नैन नैनन की यही है धर्मिया

जागे नैन तो जागे साँवरिया

कर्म उजियारा जन्म सुधियारा

जागत नैन तो जागत दिन

"कन्हैया" हृदय के कन कन में बिराजते है

"कृष्ण" ब्रह्मांडो के अणु अणु में बिराजते है

"श्याम" आंतर बाह्य तरंग के रंग रंग में बिराजते है

"गोपाल" काल के पल पल में बिराजते है

"माधव" उन्माद उमंग की गति में बिराजते है

"गोविंद" विरह के हर सिंचन में बिराजते है

"मनोहर" विशुद्ध मन को हरने की हर रीत में बिराजते है

"मोहन" मन की हर तीव्रता में बिराजते है

"गिरिधर" जगत के हर आधार पर बिराजते है

"मुकुंद" जीवन की हर मुक्ति में बिराजते है

"नटवर" सृष्टि की हर कला में बिराजते है

"राधे" प्रीत की हर लीला में बिराजते है

तेरे अक्षर छूते

तेरी तस्वीर देख कर

तेरे स्वर सुन कर

तेरी याद आ कर

होता है कुछ

जो मन दौडे

जो तन पुकारे

जो धडकन गाये

तु ही मेरी प्रीत साँवरे

तु ही मेरा गीत बावरे

तु ही मेरा इजहार

तु ही मेरा प्यार

अंग अंग में तेरे सूर

संग संग सदा तु मधुर

तु है जब तक यह जगत में

मैं भी इंतजार करु हर जन्म में

साँवरा रंग से ही है यह सारी सृष्टि

मेरा ही प्यार से खिले सारी सृष्टि

ख्यालों के ख्याल का एक साथी नहीं रहा

जब भी ख्यालों में आता था

कहीं ऐसे गीत ख्यालों में आते थे

जो कभी प्रीत डगर की "साधना" होती थी

कभी ख्यालों की अंतरंग तरंग जगाती थी।

तुम मुझसे दूर चले जाना न हो

मैं तुमसे दूर चली जाऊँगी।

"सोचा था प्यार करके चोरी से

मैं तुमको बांध लूंगी डोरी से

बांध लिया सदा ऐसे ख्यालों की डोरी से

तुम दूर जाओ या कहीं जाओ

पर

हम हर पल चोरी चोरी तुम्हें ख्यालों में लाते रहेंगे

आज मेरे नैन में सो गये श्याम

पलक झूकावु तो मलक मलक दिसे

पलक उठाऊँ तो बांकी अदा में खेले

कैसे कैसे नैन को छूये श्याम

आज मेरे नैन में सो गये श्याम

लोरियाँ सुनाऊँ मधुर अधर छलके

पलना गाऊ तो मेरे अंग अंग छलके

कैसे कैसे झूलणिया पुकारू

आज मेरे नैन में सो गये श्याम

यमुना के तीर

यमुना के नीर

खेले कितने रणबीर

झझुमें कितने रणधीर

खुली कितनी जंजीर

तुटी कितनी डोर

शहीद कितने वीर

धरती कितनी गंभीर

है हमारी धरोहर

जहां खेलत नंद किशोर

जहां रचत संस्कृति डोर

जहां लूटत चित्त का चोर

जहां मिलत मन का मोर

जहां छूटत जन्म की घोर

जहां खिलत प्रीत की भोर

यही है यमुना की तोर

आत्म से परमात्मा नाचे जोर

क्या हाल कर रखा है हर पल का

तु न आये तेरा ख्याल न आये

पर पुकारे धडकन प्रीत आत्म की

निकट ही है या

बसी है अंतर विरह में

ज्वाला गाये ज्योत गाये

गाये श्वास उच्छवास की गति

कहीं भी हो कैसी भी हो

यही ही है अपने मिलन की घडी

बिन देखे छिन जात कलप-भरि,

बिरहा-अनल दही री।

बिन दरसन अंग अंग तडप-भरि,

नैनन-नदी बही री।

प्रीत-केलि घनश्याम सांस-भरि,

आत्म-ज्योत गही री।

चैन नहीं पलछिन बिछड याद-भरि, अद्‍वैत जन्म नही री।

श्यामा-श्याम की रीत प्रीत-भरि,

सागर-नदी संग भयी री।

बिन देखे छिन जात कलप-भरि,

बिरहा-अनल दही री।

हे श्याम! तुझे बिन देखे हमारे जन्म जन्म भरे कल्प अपनी प्रीत संयोग बिना छिन जाते है,

तुम्हारे बिरह में यह अनल या ने यह वायु प्रियतम रस बिन विरहाग्नि में हम पर अगन अगन बरसाते है, हमें तडपाते है।

एक झांखी भी मेरे कोई जन्म को कुछ आश्वासन दे सकता है। मुझे अपने प्रीत किरण का कोई तेज उजागर कर सकता है। मेरे अंधकारमय काल में कोई रोशनी का संकेत मुझे कुछ याद दिला सकता है।

कहीं कल्पों से हम बिछडे है उनमें तेरी एक झांखी हमारे मिलन की कोई एक आश बंधा सकता है।

मांगू मैं जन्म जगत में

वल्लभ पुष्टि रीत से सेवा प्रीत बरसाऊ

यमुना रंग तरंग से तनुनवत्व शृंगारु

गिरिराज रज स्पर्श से नित्य शरण स्वीकार

अष्ठसखा स्वर चिंतन से चरण पखाळु

वैष्णव कुल का जीवन जीने आत्म जगाऊ

खेलत श्याम हमारे आंगन

भोजन आरोगत श्याम हमारे आंगन

भक्त खुद भक्त लीला रचत आंगन

चोरत चित्त लूटावत परमानंद हमारे आंगन

हरि से हरिदासवर्य परिवर्तित करत आंगन

पुष्टि रीत ही पुष्ट परिक्रमा है हमारे आंगन

वंदन करे "श्री हरिदासवर्य गोवर्धन" सदा

पुष्टि भक्ति को जुडते रहे सदा।

ऐसे सुंदीर श्याम से मेरा मुखडा मलका

नयन झांख कर मेरा नयन झुका

होठ मचल कर अंग अंग तडपा

दिल में छूपा कर जन्म का विरह तोडा

करते है प्यार कमल नयन काले रंग से

जोडते है धडकन साँवरे मुखडे भरे घनश्याम से

कपट से कलंक भये

कलंक से काली काजल

पर

मेरे मितवा काले साँवरे से

मैं साँवरि साँवरा मेरा घट घट होय

कंगना खनके तो समझना पिया मिलने आ रहा है

चूडियाँ थनके तो समझना प्रियतम मिलने मचलती है

पायल बाजे तो समझना पिया को मिलने दौडना है

पायल झून झूने तो समझना प्रियतम मिलने आतुर है

झुमका लचके तो समझना पिया पुकारता है

झुमका डोले तो समझाना प्रियतम बुला रहा है

हर दर्शन क्यूँ खिंचे श्रीकृष्ण के

हर भाव क्यूँ जागे श्रीराधा के

हर जिज्ञासा क्यूँ बढे श्रीकृष्ण में

हर तीव्रता क्यूँ तरसे श्रीराधा में

हर लीला क्यूँ जुडे श्रीकृष्ण से

हर चरण क्यूँ छूये श्रीराधा से

हर आनंद क्यूँ प्रकटे श्रीराधा कृष्ण से

हर विरह क्यूँ उद्विग्न हो श्रीराधा कृष्ण से

हर प्रीत धारा क्यूँ एक हो श्रीराधा कृष्ण से

हर पुष्टि रीत क्यूँ हो श्रीराधा कृष्ण से

पीली पीली मिट्टी

पीली पीली हल्दी

पीली पीली पतंग

पीला पीला आंचल

पीला पीला पघडी

पीला पीला पीतांबर

पीला पीला चरणामृत

पीला पीला जगाये प्रीत विरह की रीत

पीला पीला पुकारे प्रीत मिलन के गीत

पीला पीला रंग करे परम पद संकेत

पीला पीला पवित्र अग्नि अंतरंग रंगाये

जो समजे पीलापन को पल पल जीता जाय

क्यूँकी

सूरज का पहला सुनहरी किरण पिला

माँ का पहला प्रीताचंल अमृत पीला

प्रियतम का पहला चरण पीला

परम पिया का तिलक पीला जो घट घट जुडे प्राण।

मन ठहरने का जीद करे

तन रुकने का ध्यान धरे

पर आत्म कहे!

चलना है और चलते रहना है

आज यहाँ है, कल फिर आयेंगे

पर आज तो यहाँ से निकलना है

पाया दर्शन पीया पिया की प्रीत

पिया से न कभी बिछडना है

कैसी भी खेले जगतकी अठखेलियाँ

पिया का साथ निभाना है

नाथद्वारा के नाथ वचन है मेरा यह जीवन।

जबतक मेरा साँस है जगाये पुष्टि ज्ञान धन।।

शरण में रखना सेवा स्वीकारना बसना सदा नयन।

यही प्रार्थना याचु भगवंत साथ धरना सदा तन मन।।

मुझमें जो प्रीत जगायी रे राधा घनश्याम ने

मेरा तन मन का सुध चुराया रे राधा घनश्याम ने

राधा घनश्याम ने राधा माधव श्याम ने

मुझमें पुष्टि रीत सजायी रे वल्लभ श्री नाथ ने

मेरा जीवन संस्कार कराया रे वल्लभ श्री नाथ ने

वल्लभ श्री नाथ ने विठ्ठल गोकुल नाथ ने

मुझमें अंतरंग पुष्टि लीला जतायी रे गोकुल गोपाल ने

गोकुल गोपाल ने हरिराय यमुना ने

मुझमें व्रजरज बसायी रे यमुना गिरिराज ने

यमुना गिरिराज ने यमुना बाँके ने

यमुना बाँके ने यमुना अष्ठसखाने

बंसरी की धून आज इस तरह गूंज रही थी जैसे

अनंत विरह अग्नि में प्रीत की बूँद,

पंक में पंकज,

अंधकार में सूरज,

घनघोर घटा में बिजली,

पाषाण पत्थरों में झरना।

कहीं इंतजार प्रश्चयात राधा नहीं दिखाई दी थी और न कोई उनका संकेत था।

व्याकुल चित्त में एक ही धून बह रही थी - राधा! राधा! राधा! राधा न दिशे तो क्या हाल होता है?

हर सांस राधा!

हर सोच राधा!

हर नयन राधा!

हर कर्ण राधा!

हर तडप राधा!

हर पुकार राधा!

हर इंतजार राधा!

हर द्रष्टि राधा!

हर डग राधा!

हर क्रिया राधा!

हर रज में राधा!

हर पत्ते पर राधा!

हर फूल में राधा!

हर फल में राधा!

हर किरण में राधा!

हर धारा में राधा!

हर लहर में राधा!

हर महक में राधा!

कितने विहवळ और विवश हो गये थे बंसीधर!

पहली बार ऐसा हुआ कि राधा नहीं है। कैसी अनहोनी? कैसी विडंबना?

कभी नहीं हो सकता कि राधा बिन श्याम।

आज श्याम ढूँढ रहे है अपनी प्रियतमा को।

कोई पत्ता हिले तो राधा!

कोई बूँद की टपक तो राधा!

कोई पंखी की चहक तो राधा!

कोई झरना की गिरावट तो राधा!

कोई चहल पहल की आवाज तो राधा!

ओहहह! श्यामा के बिन श्याम तडपे।

यही सर्वे में से सूर निकले राधा! राधा! राधा!

ओहहह! कितनी उंची गगन भेदी आवाज - राधा!

एक साथ में राधा!

तो राधा है कहाँ?

कहाँ है राधा?

राधा! राधा! राधा!

नहीं दिशत राधा आंतर नयन से

नहीं छूवत राधा आंतर धडकन से

नहीं आवत राधा आंतर मन से

कहाँ है तु मेरे साँस की अमृत

कहाँ है तु मेरी कृति की मूरत

कहीं से किरण प्रसरे

कहीं से महक प्रसरी

कहीं से बूँद बरसे

कहीं से रंग उडे

कहीं से शीतलता छायी

कहीं से मृदुता छायी

कहीं से सरगम बाजी

कहीं से गीत गूंजे

कहीं से रज उठी

छा गई एक संयुक्ति आकृत

तडप रही थी सृजन मिलन

छूते बंसी धून सरगम

हो गई पिया प्रीत स्वरुप

व्याकुल नयन जैसे दिशत

हो गई राधा प्रियतम प्रीत

नयन मिले

मुख मलके

होठ तडफडे

मन पुकारे

दिल धडके

आत्म जागे

प्रीत उभरे

ऐकात्म प्रकटे

राधा कृष्ण कृष्ण राधा होय

यही अखंड प्रीत समाय

कहीं देखी पलें

कहीं जाने स्थलें

कहीं पहचाने रचेंले

हर पल में तुम्हें देखा

हर स्थल में तुम्हें जाना

हर रचना में तुम्हें पहचाना

देखते ही साँवरा मेरा

जानते ही साँवरा मेरा

पहचानते ही साँवरा मेरा

अच्छा!

पल से पलकों में छुपाया

स्थल से साँस में बसाया

रचना से रंग में डूबोया

ख्यालों के ख्वाबों में ऐसे रहना है की हर ख्याल मधुर हो जाय

ख्यालों के खेल में ऐसे खेलना है की हर ख्याल खुद्दार हो जाय

ख्यालों के खजानों में ऐसे खुलना है की हर ख्याल लूटा जाय

ख्यालों के खेत में ऐसे उगना है की हर ख्याल खुदा हो जाय

ख्यालों के खत ऐसे लिखना है की हर ख्याल खिताब हो जाय

बसे है ऐसे श्याम इन नैनों में

मैं पलक नहीं खोल पाऊ

क्या करु अब

पलक खुले तो डर मोहे लागे

श्याम कहीं भाग न जाये

पलक बंद तो डर मोहे लागे

श्याम कहीं डर न जाये

कैसी है यह उलझन मेरी

श्याम को कैसे बताऊँ

मेरे प्रियवर को भी मुझसे उलझन

कैसे किसको सुलझाऊ

ठान लिया था पलकें न खोलने का

पर कैसे नटखटता रचायी

सूरज को उगा दिया गगन में

नैन खुलवा दिया अटखल से

पर न भागा वह नैन से मेरे

आनंद आनंद छाया तन मन में

श्याम ने कर लिया गोकुल नैना ही

जुल्फें बिखरी तो सारा आसमान बादलों से छा गया

बादल टकराये तो सारा आसमान बिजली से छा गया

धरती झुमने लगी पंखी गाने लगे

फूल महकने लगे

तो

दिल में तेरी याद तडपने लगी

नयन ढूँढने लगे

होठ थरराने लगे

धडकन गाने लगी

आजा आजा रे साँवरिया

कितने पास हूँ फिर भी

वह कितने दूर है मुझसे

नैनन में उभरते है फिर भी

तस्वीर बन कर सामने है

दिल में बसे है फिर भी

धडकन बन कर तडपते है

मेरे साँवरे धडकन के साथ कैसे खेलें बार बार

मेरे साँवरे

तेरी यादों में खुद लूटाऊ

तेरी उम्मीद में खुद तडपाऊ

कैसी कैसी पल कैसे कैसे बिताऊ मेरे साँवरे

मेरे साँवरे धडकन के साथ कैसे खेलें बार बार

सांसो के तार कीर्तन सुनाऊँ

नैनन की धार शरण जगाऊ

कैसी कैसी रीति से कैसे कैसे संवारुँ मेरे साँवरे

मेरे साँवरे धडकन के साथ कैसे खेलें बार बार

तस्वीर से तु तन चुराये

दर्शन से तु मन लुभाये

प्रीत की रीति जताके कैसे कैसे ललचाये मेरे साँवरे

मेरे साँवरे धडकन के साथ कैसे खेलें बार बार

दिन घुमाये रात जगाये

जीवन भर भटकता ध्याये

कैसे नखरे विरह के कैसे कैसे रचाये मेरे साँवरे

मेरे साँवरे धडकन के साथ कैसे खेलें बार बार

द्वार तेरा ढूँढ नहीं पाऊ

प्रीत आनंद कैसे सजाऊँ

आजा एक बार आत्म ज्योत मिलाने मेरे साँवरे

मेरे साँवरे धडकन के साथ कैसे खेलें बार बार

मेरे साँवरे! मेरे साँवरे! मेरे साँवरे! मेरे साँवरे!

ओहह! मेरे प्रभु! मेरे प्रिये!

सुनते हो आहट ह्रदय प्रीत की

आ जाते हो सामने प्यार का रस पीने

कैसे हो निराले जो निकट ही रह कर

विरह की आग में तडपाते रहते हो।

जुबां से तडपती यादों कहता रहता हूँ

नयनों से अश्क बरसाता रहता हूँ

होठों से अंगारे बयां करता रहता हूँ

अक्षर से धायल जख्म लिखता रहता हूँ

क्या यही है मेरे प्यार का एहसास

जो मुझे जलाये और उन्हें न जगाये

जागना ही मेरा प्यार है

और

उन्हें जगाना ही मेरा एकरार है।

मन से जागे मन जगाये

मन मन मिलाता जाय

मन से खिले जीवन ज्योति

भव भव सुझाता जाय

मन में बसे एक साँवरिया

मधुर मधुर श्वास परोय

सपना देख रहा था सपना का

खुली पलकों में बंध नयनों से

मैं उनके चरण में था

वह मेरी धडकन में थी

पलकें उठायी उन्होंने

मैं उनके दिल में था

प्रीत के बंधन में बंधे थे

न होश मुझे था बेहोश वह थी

सांसों की उष्मा में खोये थे

नैन के किरण तुज संग खिले

मन के तरंग तुज संग झुमे

सांस के प्राण तुज संग जीये

धडकन के सूर तुज संग गाये

अधर के पंखुडि तुज संग जुडे

तन के रंग तुज संग रंगाये

दिल के तार तुज संग बाजे

कुछ न रहा अब मेरे संग

कैसे है प्रीत के अंतरंग

ओहहह!

बूँदे बरस रही है कृष्ण प्रीत की

प्यास बढ रही है कृष्ण रस की

नजर ढूँढ रही है कृष्ण दर्शन की

होठ फडफड रहे है कृष्ण पुकार के

धडकन धडक रही है कृष्ण छुवन की

मन बहक रहा है कृष्ण विरह के

तन तडप रहा है कृष्ण मिलन के

राधा को श्यामा कहे

श्यामा को लगे राधा

श्यामा को राधा कहे

राधा को लगे आधा

कैसा यह मेल है

श्यामा राधा में आधा

राधे से श्याम भये

श्याम से न भये श्यामा

इसलिए कहते है

श्यामा से राधा आधा

नन्हा सा प्यारा सा था तन मेरा

जिसको छूने नाचती थी हर बाला

मैं तडप रहा था उन्हें मिलने

वो तडप रहे थे गले लगाने

माँ बैठी थी नजर बिछाके

छू न ले कोई अपने प्यारे दुलारे

मैं टुकुर टुकुर तडपने वाली देखुं

वह अपलक अपने प्रियतम देखें

क्या करे क्या नटखट खेल खेलें

जिससे प्रीत खिलें विरह अगनकी

मैं मुस्काया माँ को पटाने

माँ ने बुलाई नींदया रानी

पलक झबाके गहरी नींद ठगाई

दौडी माँ झटपट रसोई पकाने

लपक के ठानी प्रिये दुपट्टाई

प्रीत विरह की प्यास बुझाई

ऐसी है यह मेरी नटखट अदाई

इसलिए कहते मुझे कृष्ण कन्हाई

रंग बिखरे रंग बिखेरे रंग छाये रंग छूये

रंग उडे रंग उडाये रंग बरसे रंग बसे

रंग रंगे रंग रंगाये रंग रंग से रंग रमे

रंग रंग से कहीं रंग खिलें

खिलते खिलते रंग से कहीं रंग भीगे

भीगे भीगे रंग से तन मन रंग सिंचे

सिंचे सिंचे रंग से प्रीत रंग प्रकटे

प्रकट प्रकट रंग से दिल में विरह जागे

जागे जागे रंग से प्रियतम दिल पुकारे

पुकारे पुकारे रंग मिलन के संकेत करे

संकेत संकेत रंग से तेरी तस्वीर दिखाये

दिखाये दिखाये रंग में हम तुम रंग लिपटाये

लिपटाये लिपटाये रंग में एक रंग हो जाये

गौर रंग तेरा सांवरा रंग मेरा गुल कर साँवरिया हम हो भये

प्रीत में नयन मुंदते नहीं

पुकार में होठ चिपकते नहीं

साँस में प्राण बुझते नहीं

ऐसे तेरी याद में हे साँवरिया!

तेरे विरह में

दिल को एक पल का चैन नहीं

पंछी ने उडते उडते आकाश को पूछा

हम उडते है तेरे आशियाना में

हम खेलते है तेरे आँगन में

हम लहराते है तेरे आँचल में

तो क्या एहसास करते हो

हस्ते हस्ते आकाश ने कहा

उडते आशियाना में तुम्हें छू कर मुझे स्वतंत्रता महसूस होती है

खेलते आँगन में तुमसे खेल कर मुझमें नर्तनता बिखर उठती है

लहराते आँचल में तुम्हें रख कर मुझमें मातृत्व जाग उठता है

ऐसा है ये सानिध्य तुम्हारा

जो धरती बार बार छूती है प्रीत लीला

जो सागर बार बार घुघवाता है नाम प्यारा

जो हर जन बार बार गाता है गीत सुनहरा

पंछी ने कहा

प्रीत लीला!

नाम प्यारा!

गीत सुनहरा!

आकाश ने कहा - हाँ!

वह है प्यारा सबका दुलारा

वह है न्यारा हर एक का बावरा

कृष्ण कन्हैया दिल का साँवरिया

कृष्ण जागता है नयन में

कृष्ण सुनाता है कानो में

कृष्ण खिलता है तन में

कृष्ण धडकता है साँसों में

कृष्ण बसता है रोम रोम में

कृष्ण लहराता है ख्यालों में

कृष्ण खेलता है इन्द्रियों में

कृष्ण प्रीत करता है तन मन धन की उर्जा में

यही मेरा कृष्ण!

यही मेरा कृष्ण!

यही है मेरा कृष्ण!

कान्हा!

लब से ऐसे शब्द सरकता है

इतने में तो तुम मुझे प्रीत की चादर में लिपटाते हो

तो क्या

धडकन में हर साँस पर तुम मुझे अपने साथ जुडते रहते हो

क्या अदा हो तुम्हारी

जो हर आत्म की ज्योत में सदा जागते रहते हो

ओहह! कितना अटल प्यार तुम्हारा

जो हर क्षण प्रीत की रीत निभाते हो।

निकट आते दूर चले गये

दूर दूर से पुकारते चले गये

कैसी है यह रीत तुम्हारी

तडप तडप कर निकट करें

याद याद से तन मन पुकारे

आजाओ एक बार

फिर

कहीं न जाना बार बार

मेरी साँवरि! न रुठो हर बार

ऐसे घडे हमारे घट घट रे

तन मंदिर में बसे साँवरा

ऐसे रचे हमारे कर्म रे

तेरे गुण गान निरंतर गाऊँ

रोम रोम तेरी मूरत रची रे

न तडपावो ओ मेरे गोविंद!

साँस साँस अब तुटी रे

कोई करता है याद याद

कोई पुकारता है साद साद

कोई इंतजार है फरियाद

कोई गिनता है बाद बाद

कोई तडपता है बूँद बूँद

कोई गाता है नाद नाद

कोई रहता है चंद चंद

कोई भटकता है वृंद वृंद

कोई जागता है रुंद रुंद

कोई रोता है कृंद कृंद

यही रीत है प्रीत की

जो जताये धार धार

साँवरे! कैसा है रे? क्या करे?

होली खेलन की रीत ऐसी

जो खुद के रंग को भूले

प्रियतम रंग से तन मन रंगे

जीवन पुष्टि रंग से भर दे

यमुना तरंग गिरिराज संग

वल्लभ उमंग श्याम रंग

कंगन खनकाये पायल नचाये

अंग अंग व्रजरज के संग

भर पिचकारी उडाये रंग बिरंगी

नाचे पिया संग पीये प्रीतम रंग

तुझे क्या सुबह जगाऊ

खुद ही है जगत जगवैया

तुझे क्या स्नान कराऊ

खुद ही है जल बरसैया

तुझे क्या शृंगार करु

खुद ही है सौंदर्य सलौना

तुझे क्या गीत सुनाऊ

खुद ही है सरगम सराहना

तुझे क्या भोग धराऊ

खुद ही है सामग्री धनौना

तुझे क्या नाच नचाऊ

खुद ही है नाच नचैया

तुझे क्या सेवा न्योछाऊ

खुद ही है सेवक न्योछैया

तुझे क्या रीत शिखाऊ

खुद ही है कृत कृतज्ञा

तुझे क्या खेल खिलाऊ

खुद ही है खेल खेलैया

तुझे क्या रंग लगाऊ

खुद ही है रंग रंगैया

तुझे क्या मैं बिनती करु

खुद ही है सबका रखवैया

तुझे क्या प्रीत लूटाऊ

खुद ही है प्रीत लूटैया

तुझसे क्या नजर चुराऊ

खुद ही है दिल चुरैया

तुझे क्या क्या रीत पुकारू

खुद ही है कृष्ण कन्हैया

श्याम सलौना

गोविंद गवैया

साँवरे साँवरिया

ढूँढते रहे नयन आज वही याद को

जो यादों में रहते थे नयन

तडपते रहे आज ऐसी धडकन

जो नहीं रहती थी एक ताल में

होठ पुकारते थे मन मचलता था

करते थे इंतजार जो जाग रहा था यादों में

कौन हे वह जो खिंचे बार बार

उनकी यादों से कुछ उभरती है याद

आजाओ अब यह नयनन् में

जो करे मिलने की बात

एक है मेरा प्रिय साँवरिया जो वह भी मेरे साथ तडपे बार बार

छुपता है चाँद कहीं बादलों से

छुपता है मुखडा कहीं घने बालों से

छुपता है तन कहीं रंगीन पहनावे से

छुपता है मन कहीं उत्कृष्ट निम्न विचारों से

छुपता है दिल कहीं प्रीत उर्मिओ से

यही छुपने की रीत को हम क्या समझे

मेरे सामने एक मूरत से

कबसे निहारते बैठे तेरी सूरत

ओ साँवरे!

न चाँद उगे!

न मुखडा जागे!

न तन नाचे!

न मन दौडे!

न दिल खिलें!

कैसी है यह जीवन की रीत?

तु छुपे छुपे कहाँ कहाँ?

कहाँ तक छुपे?

छुवत ख्याल कोई बंधन से

कैसा है यह बंधन

कैसा है यह ख्याल

आत्म से परमात्मा की ओर

कैसी है यह रीत निराली

जो पल पल जी कर खिंचे

न करें ख्याल कभी भी

न करें याद कभी भी

फिर भी वह हमें बुलाये

फिर भी हमें ख्याल पहूँचाये

कोई तो रीत है ब्रह्मांड की

जो हर एक को जाग जगाये

रीत है ऐसी न हो पुरानी

पल पल नयी नयी जागे

मन से सोचों तन से जानो

योग से पाओ वियोग से अनुभवो

कुछ न कुछ तो होता जाये

जो होये वह खिंचे ऐसे

बार बार आनंद से खेलें

सूर से सूर

सूर से तरंग

सूर से स्पंदन

सूर से स्पर्श

सूर से मधुर

सूर से संगीत

सूर से मीत

सूर से प्रीत

यही हो मेरे

पधारे श्री नाथजी अपने आँगन

खुद को परब्रह्म से ब्रह्म करके

भक्त से खेलने भक्त से जुडने

भक्त को श्याम रंग से रंगने

यमुना पुष्टि प्रीत बूँद बरसाये

गिरिराज शरण रज स्पर्श कराये

अष्टसखा पुष्टि सिद्धांत पुकाराये

घर घर सेवा मनोरथ सिधाये

छुये एक एक जीव अनोखे

धन्य धन्य आत्म वैष्णव हो जाये

लीला रचे वैष्णव सखी हो जाये

सखी सखा पुष्टि प्रीत जगाये

एकात्म से ब्रह्म परब्रह्म संपूर्ण धाये

हमारे श्री श्रीनाथजी हृद्‌यस्थ हो जाये

फूलों सा सिंहासन

फूलों सा तिलक

फूलों सा मंदिर

फूलों सा आँगन

फूलों सा मधुबन

फूलों सा निकुंज

फूलों सा शृंगार

फूलों सा माल्या

जिसमें पधारे प्रियतम प्यार

तिरछ तिरछ नजर नचायें

नटखट चित्त चोर नंद कुमार

कनक कटोरा रंग भरा

उडाये प्रीत रंग संस्कार

खेलें हैया अमृत होली

अंग अंग मधुर मधुर रंगाय

मैं नखराळी रुम झुम नाचुं

खेलुं संग संग भरथार

हाथ पकडे चुनरी खेंचे

पीये होठों से मेरा प्यार

तेरे धडकती धडकन के तरंग से

कुछ होता है मेरी धडकन में

निकल पडती है गूँज तेरे नाम की

यही सूर से तन मन खिलें

मन बावरा हो कर स्थिर अटक

तन मयूर बन कर नाच मटक

रिश्ता है तेरा मेरा एक रीत का

तेरे अंतरंग की असर को प्रीत कहे

मेरे उमंग की गूँज को विरह कहे

तु रज रज से बूँद बूँद से तरसे

मैं ख्याल ख्याल से अनित्य अनित्य से भटकु

पर सच कहूँ

तो

तु सर्वस्व समर्पित करता है

मैं केवल अपनो में विचरता हूँ

मुझे पा लिया न्योछावर करके

तुझे नहीं पाया तुझे लूट कर

इसलिए तु है कृष्ण कन्हैया

मैं खुद हूँ यह संसार की माया।

नहीं मेरी पास कोई रीत सुहानी

तुही संभालना मेरी जीवन नैया

साँवरिया पुकारु बावरीया हो कर

साथ निभाना प्रियतम हो कर

तेरी प्रीत है अमृत आनंद रस रुप

मेरी रीत है विष विषयों रस रुप

अमृत लूटाना संसार विष पर

कृष्ण कन्हैया मैं नाचुँ गोपी बन कर

ओ मेरा प्यार!

हर रंग से एक रंग स्फूरता है - "साँवरा"

हर गूँज से एक पुकार उठती है - "प्यारा"

हर काल से एक रीत दर्शाती है - "दिशा"

हर याद से एक बूँद बरसता है - "प्रिय विरह"

हर घडी बार बार पूछती है - कब हम एक होंगे?

फागुन आयो रे

ओय ओय फागुन आयो रे

अंग अंग करे शोर

मन मन करे जोर

जागे पिया मिलन की दोर

फागुन आयो रे

ओय ओय फागुन आयो रे

धनक धनक ढोल गाजे

छम छम पायल बाजे

भागे रोम रोम पिया की ओर

फागुन आयो रे

ओय ओय फागुन आयो रे

थरकट थरकट पैर नाचे

उलट पुलट कलाये राचे

मागे विरह प्रीत चित चोर

फागुन आयो रे

ओय ओय फागुन आयो रे

भर पिचकारी श्याम दौडे व्रज गली

ढूँढे एक व्रजनारी खेलने रंग बिरंगी होली

हुरररर! हुरररर!

हाथ न आये गौरी हटक मटक भागे छोरी

कभी श्याम पीछे कभी आगे गौरी

दोनों खेलें छुपा छुपी

नहीं पकड में आये ब्रिज बाला

हुरररर! हुरररर!

ता थैया ता थैया नाचे छूम छूम पैजनीया बाजे

नयन नखराला कदम कुद कुदाये निराला

उडाये रंगों बौछार

नहीं पकड में आये ब्रिज बाला

नटखट अदा ने खेल ऐसा छेडा

लचक मचक आयी ब्रिज बाला

पकड हाथ रंगा अलबेली नार

छा गया अंग अंग प्यार

श्यामा श्याम श्याम श्यामा हो गये रंग प्यार

ओहह! आज पुष्टि रंग बरसा

कान्हा लाया हाथों में गुलाल

भर भर के पुष्टि बहार

दौडे रंगने भक्त अपार

साथ है गोकुल के बाल

खेलने होली का त्योहार

हम भी खडे करके शृंगार

नजर आये तिरछे की धार

ऐसे लपके ऐसे झबके

आये न पकड हमार

कहीं छूपके से आया हम ओर

रंग बिरंगो उडाया करके शोर

मांगे दान आत्म प्रीत का

हमें ललचाये अपनी ओर

पकड लिया हाथ खींच के

लपक लिया तन मन में ऐसे

बरसा दिया प्रीतामृत नयन से

हो गये हम उनके वरण से

रसिया रंग उडाये

मेरी चुनरी रंग रंग जाय

मेरी चुनरी पर लाल रंग उडाये

मेरे पिया का प्यार लाल लाल

उडाये उमंग लोल लोल

रसिया रंग उडाये

मेरी चुनरी पर नीला रंग उडाये

मेरे पिया का उपरणा नीला नील

लहराये तरंग होल डोल

रसिया रंग उडाये

मेरी चुनरी पर पीला रंग उडाये

मेरे पिया का पीतांबर पीला पल

फरकाये आनंद खोल खोल

रसिया रंग उडाये

मेरी चुनरी पर सांवरा रंग उडाये

मेरे पिया का अंगना चौल गोल

बरसाये प्रीत भर भर मोल

रसिया रंग उडाये

कान्हा!

नहीं तोरे बिन होली रंगावत

नयन भटके रंग रंग बरसाने

मुखडा तरसे रंग रंग लगाने

तेरी बाँकी अदा घडी घडी जागे

नहीँ तोरे बिन होली रंगावत

यमुना तट झुरे सांकरी बोर झुरे

कदम वट झुरे व्रज गली गली झुरे

तु नहीँ तो सारा गोकुल करे वाट

नहीँ तोरे बिन होली रंगावत

गोप गोपी तडप तडप आक्रृंद करे

गौ गोपाल भटक भटक आहे भरे

करे विरह में दर्द भरो नाद

नहीँ तोरे बिन होली रंगावत

कान्हा! बुझा जा हमारी प्यास

कान्हा! रंगा जा हमारी आश

कान्हा! तोरे ही हमारी प्रीत

आजा आजा रंगा जा!

तेरी तिरछी नजर में रंग ऐसे भरे

की मैं लूटी ही जाऊँ

ऐसे लूटे मुझे ऐसे रंगे मुझे

की मैं वारी ही जाऊँ

एक रंग श्याम एक रंग प्यार का

की मैं साँवरि हो ही जाऊँ

तेरी तिरछी नजर में रंग ऐसे भरे

की मैं लूटी ही जाऊँ

एक रंग दिपक एक रंग विरह का

की मैं तडप जल ही जाऊँ

तेरी तिरछी नजर में रंग ऐसे भरे

की मैं लूटी ही जाऊँ

एक रंग बादल एक रंग बारिश का

की मैं भीगी हो ही जाऊँ

तेरी तिरछी नजर में रंग ऐसे भरे

की मैं लूटी ही जाऊँ

एक रंग अमृत एक रंग अधर का

की मैं पी की हो ही जाऊँ

तेरी तिरछी नजर में रंग ऐसे भरे

की मैं लूटी ही जाऊँ

एक रंग मुस्कान एक रंग इशारा का

की मैं दौडी दौडी जाऊँ

तेरी तिरछी नजर में ऐसे रंग भरे

की मैं लूटी ही जाऊँ

ऐसे लूटे मुझे ऐसे रंगे मुझे

की मैं वारी ही जाऊँ

भर पिचकारी सखी ओ ने मारी

कान्हा खेले रंग रंग होली

मुखडा हरखाये तन नाच नचाये

उडाके रंग सखा के संग

कान्हा खेले रंग रंग होली

बंसी बजाये सखियों बुलाये

फरफर मारे रंग अंग पिचकारी

कान्हा खेले रंग रंग होली

चुनरी उडाये कान्हा को सताये

दौड दौड सखी पकड न आये

कान्हा खेले रंग रंग होली

भर पिचकारी सखीयों ने मारी

कान्हा खेले रंग रंग होली

है भंवर उडे

फूररररे

है पोपट उडे

फूररररे

है तितली उडे

फूररररे

ऐसा ही मेरे दिलका रंग उडे नील गगन में

ऐसा ही मेरे मनका तरंग उडे फूल चमन में

दिलका भंवर गूँज गूँज गाये

मनका भंवर फूल फूल नाचें

गाये प्रीत संदेश साँवरे प्रियतम से

दिलका पपीहा कूहुँ कूहुँ गाये

मनका पपीहा दौडा दौडा जाये

पुकारे प्रेम संदेश राधे प्रियवर से

धडकन तितली मधुर मधुर छूये

साँस तितली अधर अधर पीये

चुमें प्रीत रस गोविंद प्रिय आत्म से

होली खेलन आयी व्रजनार

खेलन होली रे

हाथों में लिया गुलाल

खेलन होली रे

नंदगांव का छोरा ढूँढे

गली गली कान्हा का शोर करे

नजर न आये कान्हा

खेलन होली रे

रंग रंग पिचकारी से उडाये

घर घर से गोप बाल निकाले

पकड न आये कान्हा

खेलन होली रे

गुसपुस गुसपुस इशारा करे

यमुना कुंज से पकडे प्यारे

प्रीत रंग रंगाये कान्हा

खेलन होली रे

गोप गोपी की होली निराली

दिल रंगाये मनवा रंगाये

पुकारे हमें रंगने कान्हा

खेलन होली रे

वृंदावन की बीच बजरिया नटखट हमें छेडे

खिल खिल हसे हर नगरीया शर्मसे हमें झुके

पलछिन पलछिन भाग के पकड न आये उनसे

अठखेलियाँ की हर अदा से नजरिया हमें पकडाये

छूपत छूपत सामने आया होली खेल रंगाने

मुखडा छूपाके थम गये प्रीत रंग में भीगोने

ऐसे खेला रंग साँवरिया ने खो गई प्रीत नयन में

मैं डूबी वो डूबा प्रिय प्रियतम वृंदावन में

मन के तरंग से रंगु

तन के उमंग से रंगु

रंगु रसिया मेरे आनंद से

काजल नयन से श्याम रंग रंगु

लाल अधर से गुलाबी रंग रंगु

साँस मधुर से

साँस मधुर से

महक महक भर दुं

रंगु रसिया मेरे आनंद से

अंतर भाव से तन को भीगो दुं

प्रीत पुकार से जीवन लूटा दुं

हैया संग से

हैया संग से

अमृत रस घोल दुं

रंगु रसिया मेरे आनंद से

मन के तरंग से रंगु

तन के उमंग से रंगु

रंगु रसिया मेरे आनंद से

नयन निहालें कान्हा

तन निहालें कान्हा

मनवा निहालें कान्हा

चक्षु निहालें कान्हा

आंतर निहारें कान्हा

साँस निहारें कान्हा

धडकन निहारें कान्हा

दिल निहारें कान्हा

जहां निहालुं ताहीं कान्हा

कान्हा कान्हा कान्हा कान्हा

"कृष्ण लीला"

ऐसी तो क्या रीत थी?

ऐसी तो क्या गति थी?

ऐसी तो क्या कृति थी?

ऐसी तो क्या सृष्टि थी?

ऐसी तो क्या द्रष्टि थी?

ऐसी तो क्या प्रकृति थी?

ऐसी तो क्या शक्ति थी?

ऐसी तो क्या जुष्टजू थी?

ऐसी तो क्या तुष्टि थी?

ऐसी तो क्या वृष्टि थी?

ऐसी तो क्या प्रीत थी?

ऐसी तो क्या पुष्टि थी?

हर विचार को खिंचे

हर अक्षर को खिंचे

हर स्वर को खिंचे

हर साँस को खिंचे

हर मन को खिंचे

हर तन को खिंचे

हर धन को खिंचे

हर ज्ञान को खिंचे

हर ध्यान को खिंचे

हर धडकन को खिंचे

हर स्मरण को खिंचे

हर सूर को खिंचे

हर भाव को खिंचे

हर किरण को खिंचे

हर रज को खिंचे

हर बूँद को खिंचे

हर लहर को खिंचे

हर प्रतिबिंब को खिंचे

हर निधि को खिंचे

हर महक को खिंचे

हर रंग को खिंचे

हर तरंग को खिंचे

हर सत्य को खिंचे

हर शुद्धता को खिंचे

हर प्रश्न को खिंचे

हर संकल्प को खिंचे

हर आज्ञा को खिंचे

हर आनंद को खिंचे

हर तनुनवत्व को खिंचे

हर कला को खिंचे

यही है हर लीला कृष्ण की

जो पल हंसाये पल रुलाये

तो भी सदा साथ निभाये

विरहन का आँचल औढे

इंतजार का काजल आंजे

अश्रु की अपलक प्यास धरके

अगन रेत का तन शृंगारे

यादों की माला पहने

मिलन साँस की आश भरी

खडी हूँ तेरी प्रीत आरती उतारने

आजा साँवरिया आजा साँवरिया

व्रज की कहीं गली ढूँढा

व्रज की कहीं चप्पे चप्पे पर खोजा

व्रज की रज रज में तरासा

व्रज के मन मन में छाना

पर तु कहीं नजर न आया

कहां है हे श्याम! कहाँ तु छूप गया?

हर हर के मन छूपा हूँ

रज रज के तन में छूपा हूँ

चप्पे चप्पे के आवाज में छपा हूँ

गली गली की गूँज में छूपा हूँ।

मुझे ढूँढना हो तो तुम्हारे अंदर ढूँढो तो

हर गली में मैं - गोपाल बन कर

हर चप्पे में मैं - कान्हा बन कर

हर रज में मैं - श्याम बन कर

हर मन में मैं - कृष्ण बन कर

आजाओ! आजाओ!

आजाओ! मेरे प्रिये भक्त जन! आजाओ!

हम खेलें खेल जीवन आनंद का

हम लूटाये रंग प्रेमानंद का

हम पीये मधुर रस प्रीत आनंद का

प्यार से ही संवरती है जिंदगी

प्यार से ही निखरती है जिंदगी

प्यार से ही खिलती है जिंदगी

प्यार से ही जागती है जिंदगी

हम ही ऐसे है कि प्यार करते नहीं है

पर सदा प्यार के लिए तरसते है

प्यार तो बरसाना है

फिर क्यूँ भीख मांगती है जिंदगी

खुद को ऐसे बुलंद करदो कि प्यार करे तो ऐसा करे कि हर प्यार का प्रकार पुकारे प्यार यही है।

जैसे आज केवल और केवल हम

"राधा कृष्ण"

नयन सजल जाता है

मन अचल जाता है

तन संभल जाता है

दिल सरल जाता है

कहीं खेल खेलता है जीवन

क्यूँकि हर कोई खेल खेलता है हर पल

खेल खेल में ज्ञान बटोरा

खेल खेल में भक्ति जागी

खेल खेल में संबंध बंधे

खेल खेल में धर्म रचाये

खेल खेल में आत्म ज्योति प्रकटायी

खेल खेल में हर धन पसारा

खाली हाथ आये खाली हाथ लौटे

जो कुछ कर पाये खेल से

खेल समझ न आयी

हे जगत के बंदे!

जीवन तो ऐसी धारा है

जो पल पल केवल अमृत धरे

क्यूँ ऐसे खेल खेले जो जीवन विष करे

छोड डगरीयाँ उडा नजरियाँ

न खेल कोई खेलौयाँ

साँवरिया अगर कोई खेल खेलेगा

जगत में भीसता - भटकता - लटकता - लूटकता - डूबता रहेगा।

प्रकट भयी जब विरह की होली

अंग अंग ज्योत मिलन की जागी रे

कैसी है यह जीवन प्रीत की रीत

जो साँस उच्छवास जलायी रे

मन तडपाया तन लुटाया

रोम रोम आग लगायी रे

निंद ठुकरायी चैन घवाया

पल पल आह बरसायी रे

कैसा है तु चित्तचोर साँवरिया

जन्म जन्म होली में लपटायी रे

न रहा न जाय न ठहरा न जाय

लूट लिया जीवन हर शृंगार रे

अपलक नयन ढूँढे एक नजर तिरछे रंग का

तडपता मन आश करे मिलन रंग का

लुटाया तन इंतजार करे साँवरा रंग का

तेरे रंगों में रंगाऊ प्रीत के हर रंग रंग का

बस! अब आजा साँवरिया प्रकृति रंग भरके

ऐसा रंग दे ऐसा संग दे जन्म जन्म न कोई अंग लगे

एक ही रंग मेरे आत्म का परम रंग तेरी प्रीत का

रंग दिया प्रीत की फुहार से

कर दिया आत्म की एकरार से

न बुझे ज्योत दीपक बाती की

न छूटे सोच मन से मन मिलन की

चारों ओर से गूँज रहा है

श्री प्रभु का प्रेम

कोई चित्रजी से लीला दर्शन कराए

कोई कीर्तन के गान से छू आए

कोई अपनी अनुभूति से भक्ति लीला समझाए

कोई कथा वार्ता से सिद्धांत चरित्र बहाए

कोई अपनी धून में रह कर अपना स्पर्श लुटाए

कोई प्रतिक वस्त्र का चोला पहनकर आचरण जगाए

कोई माला तिलक धरकर धर्मसुधा बुझाए

कोई गृहसेवा पुष्ट कर धर्म धजा लहराए

कोई धर्म सिद्धांत जगा कर अज्ञान की दुहाई मिटाए

कोई समझ नासमझ हो कर सदा खुदकी भक्ति नैया तराए

कोई कौन क्या? कौन जो? खोद खोदकर अज्ञान की घोर तपस्याए

कोई स्थली स्थली पथ पथ परिक्रमा कर धर्म रज से पवित्राए

मैं अकेला जीवन पंछी उड उड कर भक्तिज्ञान जीवन लिए भटकाऊँ

कहीं कभी पा जाऊँ श्री प्रभु को जन्म सार्थक संधाऊँ।

" कृष्ण " साधन

" यमुना " साधन

" गिरिराज " साधन

" वल्लभ " साधन

" विठ्ठल " साधन

" अष्टसखा " साधन

" पुष्टि मार्ग " साधन

सच! हमने जन्म पाया ऐसे मातपिता से

सच! हमने संस्कार पाया ऐसे कुटुंब से

सच! हमने शिक्षा धरी ऐसे समाज से

सच! हमने काम सीखा ऐसे संसार से

सच! हमने धर्म धरा ऐसे बोधपाठीओ से

" कृष्ण " का कर्म का सिद्धांत नही पहचाना

" यमुना " का कृपा जलधि संश्रिते नही समझा

" गिरिराज " का स्थितिप्रज्ञता नही स्पर्शा

" वल्लभ " का सुबोधन नही जगाया

" विठ्ठल " का सेव्य प्रकार नही संवारा

" अष्टसखा " का वैष्णवता नही भक्ताया

" पुष्टि मार्ग " का पथ नही शरणाया

हाँ! कभी भी एकांत धारण करके सोचना

हमने आजतक का सारा जीवन केवल व्यवहार से ही गुजारा है?

हर तरह से अर्थोपार्जन में ही लुटा

सोचने लगा

मैं कितना दुष्कर्मी हूँ,

कितने सालों से कथा सुनता हूँ

कितने सालों से शिक्षा पढता हूँ

कितने सालों से यही देशवासियों से रहता हूँ

कितने सालों से धर्म पारायण करता हूँ

कितने सालों से अध्ययन करता हूँ

कितने सालों से पूजा सेवा करता हूँ

कितने सालों से दान दक्षिणा देता हूँ

कितने सालों से मंत्र जाप करता हूँ

फिर भी मैं सुधरता ही नही

हे प्रभु! मैं ऐसी कैसी दुनिया में आया कि मैं ऐसा हूँ।

मुझमें कोई परिवर्तन लाने के लिए यह दुनिया के कोई ऐसी व्यक्ति से मेरी कोई दिक्षा ग्रहण करावो तो यह दुनिया में मैं जी पाऊ!

ज्योत प्रज्वलाये दीप प्रकटाये

मन मन आनंद उमंग जगाये

तन तन हेत उल्लाहस बढाये

धन धन हर्ष सुहास धराये

घट घट मंगल

पट पट शुभम्

तट तट रंगम्

दीप दीप से हममें संस्कृति

रंगोली रंग से हममें प्रकृति

फूल फूलों से हममें मधुरी

धान धान्य से हममें दात्री

हममें रहो हे दीपावली

हममें रहो हे श्री सरस्वती जी

हममें रहो हे श्री लक्ष्मी जी

हममें रहो हे श्री रुप श्रृंगार जी

हममें रहो हे श्री नित्या जी

"आध्यात्मिक" का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

"अंधश्रद्ध और मान्यता" का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

"धर्म और संस्कृति" का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

"जन्म और जीवन" का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

"तन मन और धन" का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

"अनुभव और ज्ञान" का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

"परिवर्तन और पुरुषार्थ" का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

"हम और कुटुंब" का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

परिवर्तन सदाचार से हो तो पवित्रता

विशुद्धता

निखालसता

योग्यता

सभ्यता

विश्वनीयता

सम्यकता

सायुज्यता

संयमता

हममें संस्कृत होती है

यही क्षमता हमें सदा सलामत रखती है चाहे कैसी भी परिस्थिति और संयोग आये।

यही संस्कृति से हममें संस्कार, आध्यात्मिकता, समानता और साक्षरता सिंचित होती है जिससे हम अमृत होते है।

हम समझते है!

श्री प्रभु! न्याय अचूक करते है

पर कभी कभी देरी से।

नही नही!

वह तो वही ही क्षण न्याय कर ही देते है पर हम इतने अहम से भरे है की हमें उसी क्षण पता हो जाता है की हमने जो किया उसकी असर हम भान लेते ही है पर हम हमारें गुमान से उन्हें छोड देते है जैसे जैसे वह विचार और व्यवहार की विपरीतता का हमें सूक्ष्मता से पता या असर होने लग जाता है तब हमारी जागृत होने की देर हो जाती है, यही ही देर होने से हम ज्यादा सभान होते है और तब सोचते है या कहते है - देर हो गयी - और उसी पल से हम बैचेन हो जाते है - पर अपनी खुद की देरी को क्या करे!

यही ही सिद्धांत है - श्री प्रभु के न्याय का

खुद संस्कार के भान से अभान रह कर सोचते या करते या कहते रहते है - श्री प्रभु न्याय करते ही है पर कभी कभी देरी से - यह गलत है।

Vibrant Pushti

सकारात्मक पुष्टि स्पंदन

सचित्र

संस्करण भाग - 3

सेवा सत्संग स्पर्श धारा

प्रकाशक: Vibrant Pushti - Vadodara

Vibrant Pushti

53, सुभाष पार्क सोसायटी

संगम चार रास्ता

हरणी रोड - वडोदरा - 390006

गुजरात - India

Email: vibrantpushti@gmail.com

Mobile: +91 9327297507